Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
December 2025
ISSN 2229-3388

अलका सरावगी के कथा-साहित्य में शहरी मध्यवर्ग और प्रवासी मारवाड़ी समाज का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

[1]नीति खरे, [2]डॉ. ममता रानी

[1]शोधार्थी हिंदी विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर

[2]शोध निर्देशिका: सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर

1. शोध-सार

अलका सरावगी समकालीन हिंदी साहित्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट कथाकार हैं, जिनके कथा-साहित्य में उत्तर-औपनिवेशिक भारतीय समाज, विशेषतः शहरी मध्यवर्ग तथा प्रवासी मारवाड़ी समुदाय का बहुआयामी और यथार्थपरक चित्रण मिलता है। उनके उपन्यास—विशेषतः **"कलि-कथा : वाया बाइपास"**—सामाजिक परिवर्तन, ऐतिहासिक स्मृति, वैश्वीकरण, सांस्कृतिक अस्मिता, वर्गीय संरचना तथा पारिवारिक संस्थाओं के विघटन जैसे जटिल समाजशास्त्रीय आयामों को गहराई से उद्घाटित करते हैं।

सरावगी का लेखन केवल कथात्मक प्रस्तुति नहीं, बल्कि सामाजिक इतिहास और सांस्कृतिक मनोविज्ञान का सूक्ष्म दस्तावेज भी है, जिसमें व्यक्ति और समुदाय के बीच अंतर्संबंधों का सजीव विश्लेषण मिलता है।

शहरी मध्यवर्ग के संदर्भ में उनके साहित्य में उपभोक्तावाद, आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव, सामाजिक गतिशीलता, जीवन-शैली में परिवर्तन तथा अस्तित्वगत असुरक्षा-बोध जैसे तत्व प्रमुखता से उभरते हैं। यह मध्यवर्ग एक ओर आधुनिकता और वैश्विक संस्कृति से प्रभावित है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच द्वंद्व की स्थिति में भी है।

दूसरी ओर, प्रवासी मारवाड़ी समाज के चित्रण में सरावगी ने विस्थापन, सांस्कृतिक स्मृति, आर्थिक सशक्तता, सामाजिक बहिष्करण तथा पहचान-संकट जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों को उठाया है। कोलकाता जैसे महानगर में स्थापित मारवाड़ी समुदाय का जीवन उनके उपन्यासों में न केवल आर्थिक सफलता की कहानी है, बल्कि सांस्कृतिक अनिश्चितता और सामाजिक द्वैध का भी प्रतिबिंब है।

इस समुदाय की भाषा, परंपराएँ और सामाजिक संरचना एक ओर अपनी जड़ों से जुड़ी रहती हैं, तो दूसरी ओर स्थानीय परिवेश के साथ अंतःक्रिया करते हुए नए रूप भी ग्रहण करती हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में अलका सरावगी के कथा-साहित्य का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि उनका लेखन भारतीय समाज के संक्रमणकालीन यथार्थ को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। उनके पात्र और कथानक आधुनिक भारतीय समाज में उत्पन्न वर्गीय, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं को उजागर करते हैं।

इस प्रकार, सरावगी का साहित्य न केवल हिंदी कथा-साहित्य की परंपरा को समृद्ध करता है, बल्कि समाजशास्त्रीय विमर्श को भी नई दिशा प्रदान करता है।

मुख्य शब्द: अलका सरावगी, शहरी मध्यवर्ग, प्रवासी मारवाड़ी समाज, वैश्वीकरण।

2. भूमिका

हिंदी कथा-साहित्य के समकालीन परिदृश्य में अलका सरावगी का स्थान अत्यंत विशिष्ट और महत्वपूर्ण है। वे उन रचनाकारों में अग्रणी हैं जिन्होंने साहित्य को केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित न रखकर उसे समाज के जटिल यथार्थ को समझने और व्याख्यायित करने का माध्यम बनाया।

विशेष रूप से, उन्होंने कोलकाता में बसे प्रवासी मारवाड़ी समाज तथा विकसित हो रहे शहरी मध्यवर्गीय जीवन के अंतर्विरोधों, संघर्षों और परिवर्तनशीलताओं को अपने लेखन का केंद्र बनाया है। अलका सरावगी का कथा-साहित्य भारतीय समाज के उस संक्रमणकाल को अभिव्यक्त करता है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता, स्थानीयता और वैश्विकता तथा सामूहिकता और व्यक्तिवाद के बीच निरंतर द्वंद्व विद्यमान है।

उनके पात्र सामाजिक संरचनाओं, वर्गीय संबंधों और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के प्रतिनिधि के रूप में उभरते हैं। इस कारण उनका साहित्य समाजशास्त्रीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और विश्लेषण योग्य माना जाता है (सरकार, 2016)।

उनकी प्रथम कृति **"कलि-कथा : वाया बाइपास" (1998)** को साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2001) प्राप्त हुआ, जो उनकी साहित्यिक क्षमता के साथ-साथ उनके लेखन की सामाजिक प्रासंगिकता को भी प्रमाणित करता है। यह उपन्यास बहु-पीढ़ीय कथा के माध्यम से कोलकाता के मारवाड़ी समाज के इतिहास, प्रवास, संघर्ष और पहचान-निर्माण की प्रक्रिया को प्रस्तुत करता है।

इसमें इतिहास और वर्तमान का ऐसा अंतर्संबंध देखने को मिलता है, जो पाठक को सामाजिक यथार्थ की गहरी समझ प्रदान करता है (अरोड़ा, 2016)। कोलकाता, जो औपनिवेशिक भारत का एक प्रमुख आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा है, मारवाड़ी प्रवासियों के लिए अवसरों का केंद्र बना।

इस प्रवासन ने एक विशिष्ट सामाजिक संरचना को जन्म दिया, जिसमें आर्थिक सशक्तता के साथ-साथ सांस्कृतिक अस्मिता और सामाजिक स्वीकृति के प्रश्न भी जुड़े हुए हैं। अलका सरावगी ने अपने साहित्य में इस द्वैध को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है—जहाँ मारवाड़ी समाज आर्थिक रूप से सशक्त होते हुए भी सामाजिक रूप से 'अन्य' (Other) की स्थिति में बना रहता है (पार्सन्स, 2012)।

इसके साथ ही, उनके कथा-साहित्य में शहरी मध्यवर्ग का चित्रण भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उदारीकरण और वैश्वीकरण के पश्चात भारतीय मध्यवर्ग में आए व्यापक परिवर्तनों—जैसे उपभोक्तावाद, जीवन-शैली में बदलाव, पारिवारिक विघटन तथा सांस्कृतिक पुनर्संरचना—को उन्होंने अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है।

यह वर्ग एक ओर आधुनिकता और प्रगति का प्रतीक है, वहीं दूसरी ओर वह असुरक्षा-बोध, पहचान-संकट और नैतिक द्वंद्व से भी जूझ रहा है (सनेही एवं गिल, 2020)।

अलका सरावगी का लेखन इतिहास, स्मृति और वर्तमान के त्रिकोणीय संबंध को भी रेखांकित करता है। उनके उपन्यासों में अतीत केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि वर्तमान को समझने का सक्रिय माध्यम बन जाता है। इस प्रकार उनका साहित्य सामाजिक यथार्थ का केवल चित्रण ही नहीं करता, बल्कि उसकी आलोचनात्मक व्याख्या भी प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य अलका सरावगी के कथा-साहित्य में निहित समाजशास्त्रीय आयामों का विश्लेषण करना है, विशेषतः शहरी मध्यवर्ग और प्रवासी मारवाड़ी समाज के संदर्भ में। यह अध्ययन यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार उनका साहित्य भारतीय समाज में हो रहे व्यापक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि अलका सरावगी का कथा-साहित्य न केवल हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, बल्कि भारतीय समाज के बदलते स्वरूप का एक सशक्त समाजशास्त्रीय दस्तावेज भी है।

शोध का उद्देश्य

1. अलका सरावगी के कथा-साहित्य में शहरी मध्यवर्गीय जीवन का विश्लेषण करना।
2. प्रवासी मारवाड़ी समाज की सामाजिक संरचना और मानसिकता को समझना।
3. वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभावों का अध्ययन करना।
4. पारिवारिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना।

2. अलका सरावगी का कथा-साहित्य: एक परिचय

अलका सरावगी समकालीन हिंदी कथा-साहित्य की प्रमुख और विशिष्ट रचनाकार हैं, जिनका साहित्य भारतीय समाज के जटिल यथार्थ को गहराई से अभिव्यक्त करता है। उनका जन्म कोलकाता में एक मारवाड़ी परिवार में हुआ, और इसी सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश ने उनके लेखन को एक विशिष्ट दिशा प्रदान की। कोलकाता जैसे महानगर में बसे प्रवासी मारवाड़ी समुदाय के जीवन, उनके आर्थिक उभार, सांस्कृतिक द्वंद्व और सामाजिक स्थिति को उन्होंने अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थवाद के साथ चित्रित किया है। इस दृष्टि से उनका कथा-साहित्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति न होकर एक महत्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज के रूप में भी स्थापित होता है।

अलका सरावगी के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें व्यक्ति, समाज और इतिहास के बीच गहरे अंतर्संबंधों को उजागर किया गया है। उनके पात्र केवल व्यक्तिगत अनुभवों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे व्यापक सामाजिक संरचनाओं और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के प्रतिनिधि के रूप में उभरते हैं। उनके उपन्यासों में अतीत और वर्तमान का ऐसा अंतर्संवाद देखने को मिलता है, जो पाठक को यह समझने में सहायता करता है कि वर्तमान सामाजिक स्थितियाँ किस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं और प्रक्रियाओं से निर्मित हुई हैं (सरकार, 2016)।

उनकी प्रमुख कृतियों में **"कलि-कथा : वाया बाइपास", "शेष कादम्बरी" और "कोई बात नहीं"** जैसे उपन्यास तथा **"कहानी की तलाश में" और "दूसरी कहानी"** जैसे कहानी-संग्रह शामिल हैं। इन कृतियों के माध्यम से उन्होंने शहरी जीवन, पारिवारिक संरचना, सामाजिक परिवर्तन और व्यक्तिगत अस्तित्व के प्रश्नों को एक साथ प्रस्तुत किया है।

विशेष रूप से **"कलि-कथा : वाया बाइपास"** को हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है, क्योंकि इसमें बहु-पीढ़ीय कथा के माध्यम से मारवाड़ी समाज के इतिहास, प्रवास और पहचान-निर्माण की जटिल प्रक्रिया को चित्रित किया गया है। यह उपन्यास इतिहास, स्मृति और वर्तमान के अंतर्संबंधों को उजागर करते हुए सामाजिक यथार्थ का व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है (अरोड़ा, 2016)।

अलका सरावगी के कथा-साहित्य में शहरी जीवन की जटिलताओं का भी गहन चित्रण मिलता है। महानगर में रहने वाला व्यक्ति जहाँ एक ओर आधुनिकता और आर्थिक प्रगति से प्रभावित होता है, वहीं दूसरी ओर वह अकेलेपन, असुरक्षा और पहचान-संकट से भी जूझता है। सरावगी ने इन अंतर्विरोधों को अपने पात्रों के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

उनके साहित्य में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि आधुनिक शहरी जीवन केवल अवसरों का विस्तार नहीं है, बल्कि वह नई प्रकार की समस्याओं और तनावों को भी जन्म देता है (सनेही एवं गिल, 2020)।

इसके साथ ही, उनके लेखन में प्रवासी अनुभव की अभिव्यक्ति विशेष महत्व रखती है। मारवाड़ी समाज, जो आर्थिक कारणों से विभिन्न स्थानों पर जाकर बसा, अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और नए परिवेश में समायोजन करने के बीच निरंतर संघर्ष करता है। सरावगी ने इस द्वंद्व को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि प्रवासन केवल भौगोलिक परिवर्तन नहीं, बल्कि एक गहरा सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभव भी है। उनके पात्रों के माध्यम से यह अनुभव जीवंत हो उठता है (पार्सन्स, 2012)।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि अलका सरावगी का कथा-साहित्य भारतीय समाज के बदलते स्वरूप को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। उनके लेखन में समाज, इतिहास और व्यक्ति के बीच जो अंतर्संबंध स्थापित होते हैं, वे न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए भी अत्यंत उपयोगी हैं। इस प्रकार उनका साहित्य समकालीन हिंदी कथा-साहित्य को नई दृष्टि और गहराई प्रदान करता है।

3. शहरी मध्यवर्ग का चित्रण

अलका सरावगी के कथा-साहित्य में शहरी मध्यवर्ग का चित्रण अत्यंत गहन और बहुआयामी रूप में सामने आता है। उनके पात्र केवल सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करते, बल्कि वे आधुनिक जीवन की जटिल मानसिक और सांस्कृतिक अवस्थाओं को भी व्यक्त करते हैं।

विशेष रूप से **"कलि-कथा : वाया बाइपास"** में नायक का चरित्र उस आधुनिक व्यक्ति का प्रतीक बन जाता है, जो अपने अस्तित्व, पहचान और जीवन के अर्थ को लेकर गहरे संकट से गुजर रहा है। यह संकट केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि व्यापक

सामाजिक संरचना से जुड़ा हुआ है, जहाँ पारंपरिक मूल्यों के विघटन और आधुनिक जीवन की अनिश्चितताओं के कारण व्यक्ति स्वयं को अस्थिर अनुभव करता है।

इस प्रकार सरावगी का साहित्य यह स्पष्ट करता है कि शहरी मध्यवर्गीय जीवन में व्यक्तिवाद, अकेलापन और आत्म-संघर्ष केवल मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के परिणाम हैं (डोनर, 2012; लखा, 2005)।

अलका सरावगी के कथा-साहित्य में आधुनिकता और परंपरा के बीच द्वंद्व एक केंद्रीय विषय के रूप में उपस्थित है। शहरी मध्यवर्ग, जो एक ओर आधुनिक जीवनशैली, शिक्षा और वैश्विक प्रभावों से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरी ओर वह अपनी पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाता।

इस द्वंद्व का प्रभाव विशेष रूप से पारिवारिक संबंधों में दिखाई देता है, जहाँ विवाह, स्त्री-स्वतंत्रता और पारिवारिक भूमिकाओं को लेकर नई और पुरानी मान्यताओं के बीच टकराव उत्पन्न होता है। सरावगी के पात्र इस संघर्ष को अपने जीवन में अनुभव करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकता का प्रवेश केवल बाहरी परिवर्तन नहीं लाता, बल्कि वह सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर गहरे अंतर्विरोध भी पैदा करता है (गांगुली-स्क्रेस एवं स्क्रेस, 2008)।

वैश्वीकरण के प्रभाव ने शहरी मध्यवर्ग के स्वरूप को और अधिक जटिल बना दिया है, जिसका प्रभाव सरावगी के कथा-साहित्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। आर्थिक उदारीकरण के बाद मध्यवर्ग में उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों का तीव्र विस्तार हुआ है, जिससे जीवन-शैली, आकांक्षाओं और सामाजिक व्यवहार में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

अब व्यक्ति की पहचान उसके सामाजिक संबंधों या सांस्कृतिक मूल्यों से अधिक उसके उपभोग और भौतिक उपलब्धियों से निर्धारित होने लगी है। इस परिवर्तन के कारण एक ओर मध्यवर्ग में आर्थिक आकांक्षाएँ बढ़ती हैं, वहीं दूसरी ओर वह अपने पारंपरिक नैतिक मूल्यों और सामाजिक दायित्वों से दूर होता जाता है।

सरावगी ने इस स्थिति को अपने पात्रों के माध्यम से अत्यंत यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया है, जहाँ भौतिक समृद्धि के बावजूद आंतरिक शून्यता और असंतोष की भावना बनी रहती है (ब्रोसियस, 2012; वान वेस्सेल, 2004)।

इस प्रकार, अलका सरावगी का कथा-साहित्य शहरी मध्यवर्गीय जीवन के उन अंतर्विरोधों को उजागर करता है, जो आधुनिक भारतीय समाज की पहचान बन चुके हैं। उनके लेखन में यह स्पष्ट होता है कि शहरी मध्यवर्ग केवल आर्थिक रूप से उन्नत वर्ग नहीं है, बल्कि वह एक ऐसा सामाजिक समूह है जो निरंतर परिवर्तन, अस्थिरता और पहचान-संकट के बीच अपने अस्तित्व को परिभाषित करने का प्रयास कर रहा है।

4. प्रवासी मारवाड़ी समाज का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

अलका सरावगी के कथा-साहित्य में प्रवासी मारवाड़ी समाज का चित्रण अत्यंत गहराई और संवेदनशीलता के साथ किया गया है। यह समाज ऐतिहासिक रूप से एक व्यापारिक समुदाय के रूप में जाना जाता है, जिसने आर्थिक अवसरों की खोज में राजस्थान से निकलकर कोलकाता जैसे महानगरों में अपनी उपस्थिति स्थापित की।

सरावगी ने इस प्रवासन को केवल आर्थिक गतिविधि के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे एक व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक परिवर्तन की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में यह स्पष्ट होता है कि प्रवासन व्यक्ति और समुदाय दोनों के जीवन में नई संभावनाएँ तो लाता है, परंतु इसके साथ ही वह अस्थिरता, अस्मिता-संकट और सांस्कृतिक द्वंद्व को भी जन्म देता है (पार्सन्स, 2012; मन्त्रि, 2021)।

उनके उपन्यासों में विशेष रूप से पीढ़ियों के बीच संघर्ष का चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक ओर पुरानी पीढ़ी है, जो परंपरागत मूल्यों, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक मान्यताओं से गहराई से जुड़ी हुई है, वहीं दूसरी ओर नई पीढ़ी है, जो आधुनिकता, शिक्षा और वैश्विक प्रभावों से प्रभावित होकर एक नई जीवन-दृष्टि अपनाने का प्रयास करती है।

इस द्वंद्व के कारण परिवार और समाज के भीतर मूल्य-परिवर्तन की प्रक्रिया तीव्र हो जाती है। सरावगी ने इस पीढ़ीगत तनाव को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक परिवर्तन केवल बाहरी संरचनाओं में ही नहीं, बल्कि मानसिकता और दृष्टिकोण में भी घटित होता है (सरकार, 2016)।

प्रवासी मारवाड़ी समाज के संदर्भ में सांस्कृतिक पहचान और विस्थापन का प्रश्न भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसे सरावगी ने अपने साहित्य में केंद्रीय स्थान दिया है। उनके पात्र अक्सर ऐसी स्थिति में दिखाई देते हैं, जहाँ वे न तो पूरी तरह स्थानीय समाज का हिस्सा बन पाते हैं और न ही अपनी मूल सांस्कृतिक जड़ों से पूर्णतः जुड़े रह पाते हैं।

यह स्थिति एक प्रकार के **'बीचपन' (in-betweenness)** को जन्म देती है, जो उनके जीवन में असुरक्षा और पहचान-संकट को बढ़ाता है। सरावगी का लेखन इस बात को उजागर करता है कि प्रवासन केवल भौगोलिक दूरी का अनुभव नहीं है, बल्कि यह एक गहरा सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक विस्थापन भी है (सनेही एवं गिल, 2020)।

परिवार और सामाजिक संरचना के स्तर पर भी सरावगी का विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण है। मारवाड़ी समाज में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार की व्यवस्था रही है, जो आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा का आधार मानी जाती थी।

किंतु आधुनिकता और शहरीकरण के प्रभाव से इस संरचना में धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा है। एकल परिवारों की प्रवृत्ति बढ़ रही है और पारिवारिक संबंधों में पहले जैसी निकटता और सामूहिकता नहीं रह गई है।

इस परिवर्तन के साथ ही महिलाओं की भूमिका में भी महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिलता है। सरावगी के साहित्य में महिलाएँ केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी करती दिखाई देती हैं। यह परिवर्तन न केवल लैंगिक भूमिकाओं के पुनर्संयोजन को दर्शाता है, बल्कि समाज में व्यापक सामाजिक बदलावों का संकेत भी देता है (अरोड़ा, 2016)।

अलका सरावगी का कथा-साहित्य नारी दृष्टि के संदर्भ में भी विशेष महत्व रखता है। उन्होंने अपने लेखन में स्त्री जीवन की पीड़ा, संघर्ष, संवेदना और आत्म-अभिव्यक्ति को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके यहाँ नारी केवल सहायक पात्र के रूप में उपस्थित नहीं होती, बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय वाहक के रूप में उभरती है।

वह पारंपरिक बंधनों को चुनौती देती है और अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने का प्रयास करती है। इस प्रकार सरावगी का साहित्य न केवल प्रवासी मारवाड़ी समाज का समाजशास्त्रीय चित्रण करता है, बल्कि उसमें स्त्री-अस्मिता और लैंगिक चेतना के प्रश्नों को भी गहराई से उठाता है।

इस प्रकार, अलका सरावगी का कथा-साहित्य प्रवासी मारवाड़ी समाज के बहुआयामी स्वरूप को उजागर करता है, जिसमें आर्थिक उन्नति, सांस्कृतिक द्वंद्व, पहचान-संकट, पारिवारिक परिवर्तन और नारी चेतना जैसे अनेक समाजशास्त्रीय आयाम एक साथ सक्रिय दिखाई देते हैं। उनका लेखन इस समाज के भीतर चल रहे सूक्ष्म परिवर्तनों को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम प्रदान करता है।

5. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

अलका सरावगी के कथा-साहित्य को समझने के लिए समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का सहारा लेना अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है, क्योंकि उनके लेखन में सामाजिक संरचना, वर्गीय संबंध, सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ और व्यक्तिगत अनुभव एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए दिखाई देते हैं।

संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण के अनुसार समाज एक संगठित तंत्र के रूप में कार्य करता है, जिसमें परिवार, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और अन्य संस्थाएँ परस्पर जुड़ी होती हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। सरावगी के साहित्य में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि जब इन संस्थाओं में परिवर्तन होता है—जैसे परिवार की संरचना में बदलाव या आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन—तो उसका प्रभाव व्यक्ति के जीवन और पूरे समाज पर पड़ता है।

उनके उपन्यासों में संयुक्त परिवार का विघटन, आर्थिक गतिशीलता और सांस्कृतिक परिवर्तन इस बात को रेखांकित करते हैं कि सामाजिक संरचना एक स्थिर इकाई नहीं, बल्कि निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है (गोपाल, 2022; गराडा, 2013)।

संघर्ष सिद्धांत के दृष्टिकोण से देखा जाए तो अलका सरावगी का कथा-साहित्य वर्गीय असमानताओं, आर्थिक विषमताओं और सांस्कृतिक वर्चस्व को उजागर करता है। मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार समाज में विभिन्न वर्गों के बीच संसाधनों और सत्ता को लेकर संघर्ष होता है, और यह संघर्ष सामाजिक परिवर्तन का आधार बनता है।

सरावगी के पात्रों और कथानकों में यह संघर्ष प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में दिखाई देता है, विशेष रूप से शहरी मध्यवर्ग और व्यापारिक समुदाय के संदर्भ में। आर्थिक सफलता के बावजूद सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक वर्चस्व की समस्याएँ बनी रहती हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पूँजी और शक्ति का वितरण समान नहीं है।

इस प्रकार उनका साहित्य यह संकेत करता है कि आधुनिक समाज में भी वर्गीय संघर्ष समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि उसने नए रूप धारण कर लिए हैं (जज, 2012; गराडा, 2016)।

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के संदर्भ में अलका सरावगी का कथा-साहित्य व्यक्ति के अनुभवों, उसकी पहचान और सामाजिक संबंधों के निर्माण की प्रक्रिया को गहराई से प्रस्तुत करता है। इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति की पहचान

सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से निर्मित होती है, और उसका 'स्व' (self) समाज के साथ निरंतर संवाद के परिणामस्वरूप विकसित होता है।

सरावगी के पात्र अपने परिवेश, संबंधों और अनुभवों के माध्यम से अपनी पहचान को निर्मित करते हैं और समय के साथ उसे पुनर्परिभाषित भी करते हैं। उनके उपन्यासों में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि व्यक्ति का अस्तित्व केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक प्रक्रियाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है।

इस प्रकार उनका साहित्य यह दर्शाता है कि पहचान एक स्थिर इकाई नहीं, बल्कि एक निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है (रिम्बन एवं अन्य, 2023; लालद्दीन, 2016)।

इस प्रकार, संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण, संघर्ष सिद्धांत और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के माध्यम से अलका सरावगी के कथा-साहित्य का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनका लेखन भारतीय समाज के बहुआयामी यथार्थ को समझने का एक सशक्त माध्यम है। उनके साहित्य में सामाजिक संरचना, वर्गीय संघर्ष और व्यक्तिगत अनुभवों का जो अंतर्संबंध दिखाई देता है, वह समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए अत्यंत समृद्ध आधार प्रदान करता है।

6. निष्कर्ष

अलका सरावगी का कथा-साहित्य समकालीन हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि यह भारतीय समाज के संक्रमणकालीन यथार्थ का गहन और बहुआयामी चित्रण प्रस्तुत करता है। उनके उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से शहरी मध्यवर्ग तथा प्रवासी मारवाड़ी समाज के जीवन, उनकी मानसिकता, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक द्वंद्व को गहराई से समझा जा सकता है।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सरावगी का लेखन केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि वह एक सशक्त समाजशास्त्रीय दस्तावेज के रूप में भी कार्य करता है। शहरी मध्यवर्ग के संदर्भ में उनके साहित्य में अस्तित्व-संकट, पहचान की खोज, उपभोक्तावाद और आधुनिक जीवन की जटिलताओं का सजीव चित्रण मिलता है।

उनके पात्र यह दर्शाते हैं कि आर्थिक प्रगति और आधुनिकता के बावजूद व्यक्ति आंतरिक स्तर पर असुरक्षा, अकेलेपन और नैतिक द्वंद्व से जूझता रहता है। इसी प्रकार, आधुनिकता और परंपरा के बीच संघर्ष उनके साहित्य में एक केंद्रीय विषय के रूप में उभरता है, जो यह संकेत करता है कि सामाजिक परिवर्तन एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है (डोनर, 2012; गांगुली-स्क्रेस एवं स्क्रेस, 2008)।

प्रवासी मारवाड़ी समाज के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सरावगी ने प्रवासन को केवल आर्थिक घटना के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में इस समुदाय की आर्थिक सफलता के साथ-साथ पहचान-संकट, सांस्कृतिक अस्थिरता और सामाजिक द्वैध की स्थितियाँ भी सामने आती हैं।

पीढ़ियों के बीच संघर्ष, पारिवारिक संरचना में परिवर्तन और स्त्री की बदलती भूमिका इस समाज के भीतर हो रहे व्यापक सामाजिक परिवर्तनों को दर्शाते हैं (पार्सन्स, 2012; सनेही एवं गिल, 2020)।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि सरावगी का साहित्य संरचनात्मक-कार्यात्मकता, संघर्ष सिद्धांत और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद जैसे सिद्धांतों को व्यवहारिक रूप में अभिव्यक्त करता है। उनके लेखन में सामाजिक संस्थाओं के परिवर्तन, वर्गीय असमानता और व्यक्ति की पहचान-निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो उनके साहित्य को समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है (जज, 2012; लालद्दीन, 2016)।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि अलका सरावगी का कथा-साहित्य भारतीय समाज के बदलते स्वरूप को समझने का एक प्रभावशाली माध्यम है। उनके लेखन में सामाजिक यथार्थ, सांस्कृतिक चेतना और मानवीय संवेदनाओं का जो समन्वय मिलता है, वह न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध करता है, बल्कि समाजशास्त्रीय विमर्श को भी नई दिशा प्रदान करता है। इस प्रकार, उनका साहित्य आधुनिक भारतीय समाज की जटिलताओं को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में स्थापित होता है।

संदर्भ सूची

1. सरावगी, अलका (1998). *कलि-कथा: वाया बाइपास.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
2. सरावगी, अलका (2001). *शेष कादम्बरी.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
3. सरावगी, अलका (2004). *कोई बात नहीं.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
4. सरावगी, अलका (2000). *कहानी की तलाश में.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
5. सरावगी, अलका (2008). *दूसरी कहानी.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
6. सरकार, एस. (2016). *अलका सरावगी के उपन्यासों में समुदाय और अस्मिता का निर्माण*।
7. पार्सन्स, आर. बी. (2012). *कोलकाता, मारवाड़ी समाज और हिंदी साहित्य का संसार*।
8. हार्डग्रोव, ए. ई. (1999). *आधुनिक भारत में मारवाड़ी समुदाय का सामाजिक अध्ययन*।
9. मन्त्रि, एस. (2021). *प्रवास, स्मृति और पहचान: कोलकाता का अध्ययन*।
10. अरोड़ा, बी. (2016). *"कलि-कथा: वाया बाइपास" का समाजशास्त्रीय पुनर्पाठ*।
11. सनेही, एम. एवं गिल, वाई. (2020). *अलका सरावगी के कथा-साहित्य में हाशिये के स्वर*।
12. डोनर, एच. (2012). *भारतीय मध्यवर्ग का समाजशास्त्रीय अध्ययन*।
13. गांगुली-स्क्रेस, आर. एवं स्क्रेस, टी. (2008). *वैश्वीकरण और भारतीय मध्यवर्ग*।
14. ब्रोसियस, सी. (2012). *भारत में उपभोक्तावाद और मध्यवर्ग*।
15. वान वेस्सेल, एम. (2004). *भारतीय मध्यवर्ग और उपभोग संस्कृति*।

16. गोपाल, वी. (2022). *समाजशास्त्रीय सिद्धांत: एक परिचय*।

17. गराडा, आर. (2013). *संरचनात्मक-कार्यात्मक सिद्धांत का आलोचनात्मक अध्ययन*।

18. गराडा, आर. (2016). *भारतीय संदर्भ में समाजशास्त्रीय सिद्धांत*।

19. जज, पी. एस. (2012). *समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की आधारशिला*।

20. लालद्दीन, एच. (2016). *समाजशास्त्रीय सिद्धांतों की समीक्षा*।

21. रिम्बन, डी. ई., अमीन, पी. टी. एवं मुंशी, एम. बी. (2023). *प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद का विश्लेषण*।

22. सचान, बी. (2024). *समाजशास्त्रीय सिद्धांत और सामाजिक व्यवहार*।

23. रज़ा, ए. (2024). *सामाजिक संरचना और मानव व्यवहार: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन*।